तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

मूलसूत्र

हितोपदेशी वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

सर्वज्ञ प्रयोजन - भावना

निश्चय मोक्षमार्ग की व्याख्या

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ॥ १ ॥

अर्थ : [सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि] सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, और सम्यक्चारित्र तीनों मिलाकर [मोक्षमार्गः] मोक्ष का मार्ग है, अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति का उपाय है।

सम्यग्दर्शन + सम्यग्ज्ञान + सम्यक्चारित्र = मोक्षमार्ग

तीनों की एकता ही मोक्षमार्ग है।

निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥२॥

अर्थ - [तत्त्वार्थश्रद्धानं] तत्त्व (वस्तु) के स्वरूपसहित अर्थ; जीवादि पदार्थों की श्रद्धा करना [सम्यग्दर्शनम्] सम्यग्दर्शन है।

तत्त्व + अर्थ + श्रद्धान = सम्यग्दर्शन

अध्याय १: सूत्र ३ - निश्चय सम्यग्दर्शन के भेद

निश्चय सम्यग्दर्शन के भेद

तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥ ३ ॥

अर्थ - [तत्] वह सम्यग्दर्शन, [निसर्गात्] स्वभाव से [वा] अथवा [अधिगमात्] दूसरे के उपदेशादि से उत्पन्न होता है।

तत्त्वों के नाम

जीवाजीवास्त्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।।४ ।।

अर्थ - [जीवाजीवास्त्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षाः] १ जीव, २ अजीव, ३ आस्त्रव, ४ बन्ध, ५ संवर, ६ निर्जरा, और ७ मोक्ष—ये सात [तत्त्वम्] तत्त्व हैं।

विषय-वस्तु

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
निश्चय मोक्षमार्ग की व्याख्या	१	१
निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण	२	१
निश्चय सम्यग्दर्शन के भेद	३	१
तत्त्वों के नाम	४	१
निश्चयसम्यग्दर्शनादि शब्दों के अर्थ समझने की रीत	५	१

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र ५

निश्चयसम्यग्दर्शनादि शब्दों के अर्थ समझने की रीति

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ॥५ ॥

अर्थ—[नामस्थापनाद्रव्यभावतः] नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव से [तत् न्यासः] उन सात तत्त्वों तथा सम्यग्दर्शनादि का लोकव्यवहार होता है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः।।५।। - सूत्र का प्रयोजन

- वक्ता के मुख से निकले हुए शब्द की अपेक्षा को लेकर भिन्न-भिन्न अर्थ होते हैं।

- उन अर्थों में व्यभिचार (दोष) न आए और सच्चा अर्थ कैसे हो, यह बताने के लिए यह सूत्र कहा है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यास: ।।५ ।। - अर्थ के भेद

- तत्त्वार्थ = तत्त्व् + अर्थ = भाव + वस्तु = वस्तु का भाव
- इन अर्थों के सामान्य चार प्रकार किए गए हैं।
- नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव निक्षेप

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यास: ।।५ ।। - निक्षेप की व्याख्या

- पदार्थों के भेद को न्यास अथवा निक्षेप कहा जाता है।
- प्रमाण और नय के अनुसार प्रचलित हुए लोकव्यवहार को निक्षेप कहते हैं।
- ज्ञेयपदार्थ अखण्ड है, तथापि उसे जानने पर, ज्ञेयपदार्थ के जो भेद (अंश; पहलू) किए जाते हैं, उसे निक्षेप कहते हैं।

अध्याय १: सूत्र ५ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि शब्दों के अर्थ समझने की रीति

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यास: ।।५।। - प्रमाण , नय , निक्षेप

- निक्षेप को जाननेवाले ज्ञान को नय कहते हैं।
- निक्षेप, नय का विषय है और नय, निक्षेप का विषयी (विषय करनेवाला) है।

अध्याय १: सूत्र ५ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि शब्दों के अर्थ समझने की रीति

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ।।५।। - निक्षेप के भेद

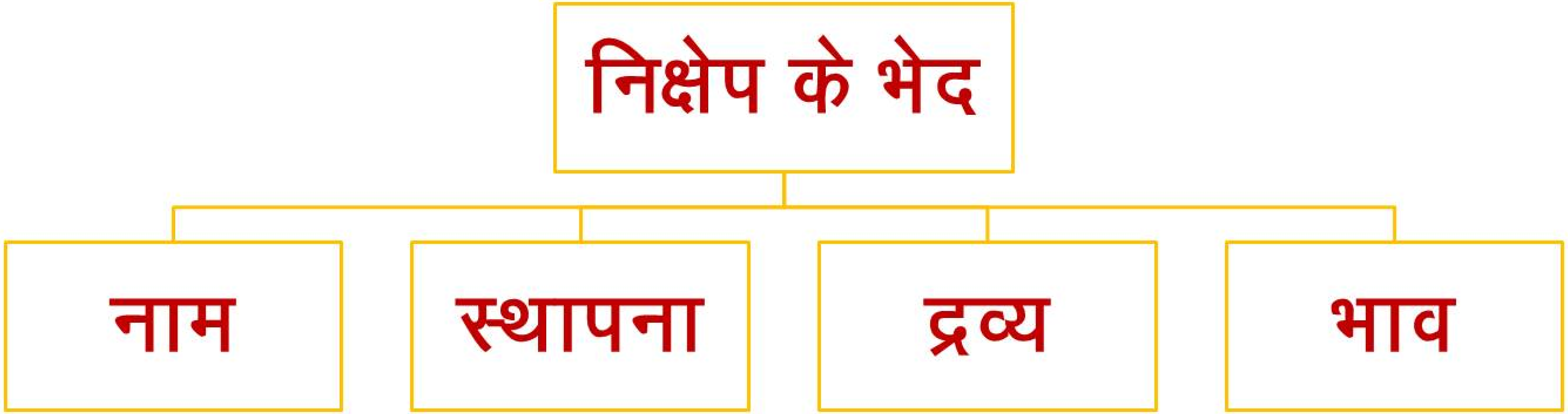

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ।।५।। - नामनिक्षेप

- गुण, जाति या क्रिया की अपेक्षा किए बिना, किसी का यथेच्छ नाम रख लेना, सो नामनिक्षेप है।
- जैसे, किसी का नाम 'जिनदत्त' रखा, किन्तु वह जिनदेव के द्वारा दिया हुआ नहीं है तथापि लोकव्यवहार (पहचानने) के लिए उसका 'जिनदत्त' नाम रखा गया है।
- एकमात्र वस्तु की पहिचान के लिए उसकी जो संज्ञा रख ली जाती है, उसे नामनिक्षेप कहते हैं।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यास: ।।५।। - स्थापनानिक्षेप

- किसी अनुपस्थित (अविद्यमान) वस्तु का, किसी दूसरी उपस्थित वस्तु में सम्बन्ध या मनोभावना को जोड़कर आरोप कर देना कि 'यह वही है' सो ऐसी भावना को **स्थापना** कहा जाता है।
- जहाँ ऐसा आरोप होता है, वहाँ जीवों के ऐसी मनोभावना होने लगती है कि 'यह वही' है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ।।५ ।। - स्थापनानिक्षेप के प्रकार

स्थापनानिक्षेप के प्रकार

- तदाकारस्थापना
- अतदाकारस्थापना

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यास: ।।५।। - सूत्र का प्रयोजन

- जिस पदार्थ का जैसा आकार हो, वैसा आकार उसकी स्थापना में करना, सो 'तदाकारस्थापना' है।
- और चाहे जैसा आकार कर लेना, सो 'अतदाकारस्थापना' है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः।।५।। - स्थापनानिक्षेप का कारण

- सदृशता को स्थापना निक्षेप का कारण नहीं मान लेना चाहिए, उसका कारण तो केवल मनोभावना ही है।
- जनसमुदाय की यह मानसिक भावना जहाँ होती है, वहाँ स्थापनानिक्षेप समझना चाहिए।
- जैसे, वीतराग प्रतिमा को देखकर, बहुत से जीवों के भगवान और उनकी वीतरागता की मनोभावना होती है; इसलिए वह स्थापना निक्षेप है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः।।५।। - अन्तर

नामनिक्षेप और स्थापनानिक्षेप में यह अन्तर है कि नामनिक्षेप में पूज्य–अपूज्य का व्यवहार नहीं होता और स्थापना निक्षेप में यह व्यवहार होता है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यास: ।।५ ।। - द्रव्यनिक्षेप

- भूत और भविष्यत् पर्याय की मुख्यता को लेकर, उसे वर्तमान में कहना-जानना, सो द्रव्यनिक्षेप है।
- जैसे, श्रेणिक राजा, भविष्य में तीर्थङ्कर होंगे, उन्हें वर्तमान में तीर्थङ्कर कहना-जानना।
- और भूतकाल में हो गए भगवान महावीरादि तीर्थङ्करों को, वर्तमान तीर्थङ्कर मानकर स्तुति करना, सो द्रव्यनिक्षेप है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ।।५ ।। - भावनिक्षेप

- केवल वर्तमान पर्याय की मुख्यता से जो पदार्थ वर्तमान जिस दशा में है, उसे उस रूप कहना-जानना सो भावनिक्षेप है।
- जैसे, सीमन्धर भगवान वर्तमान तीर्थङ्कर के रूप में महाविदेह में विराजमान हैं, उन्हें तीर्थङ्कर कहना-जानना।
- और भगवान महावीर वर्तमान में सिद्ध हैं, उन्हें सिद्ध कहना-जानना सो भावनिक्षेप है।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यास: ।।५ ।। - दृष्टांत

- जहाँ 'सम्यग्दर्शनादि' या 'जीवाजीवादि' शब्दों का प्रयोग किया गया हो, वहाँ कौन सा निक्षेप लागू होता है, सो निश्चय करके जीव को सच्चा अर्थ समझ लेना चाहिए।

- सूत्र १ में 'सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि' तथा 'मोक्षमार्ग: ', यह शब्द तथा सूत्र २ में सम्यग्दर्शन, यह शब्द भावनिक्षेप से कहा - ऐसा समझना चाहिए।

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यास: ।।५।। - सूत्र का सिद्धान्त

- भगवान के नामनिक्षेप और स्थापनानिक्षेप, शुभभाव के निमित्त हैं; इसलिए व्यवहार हैं।
- द्रव्यनिक्षेप निश्चयपूर्वक व्यवहार होने से, अपनी शुद्धपर्याय थोड़े समय के पश्चात् प्रगट होगी, यह सूचित करता है।
- भावनिक्षेप निश्चयपूर्वक अपनी शुद्धपर्याय होने से धर्म है, ऐसा समझना चाहिए।
- निश्चय और व्यवहारनय का स्पष्टीकरण, इसके बाद के सूत्र की टीका में किया है।

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र ५

विषय-वस्तु

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
निश्चय मोक्षमार्ग की व्याख्या	१	१
निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण	२	१
निश्चय सम्यग्दर्शन के भेद	३	१
तत्त्वों के नाम	४	१
निश्चयसम्यग्दर्शनादि शब्दों के अर्थ समझने की रीत	५	१
निश्चयसम्यग्दर्शनादि का उपाय	६	१

निश्चयसम्यग्दर्शनादि का उपाय

प्रमाणनयैरधिगमः ॥६ ॥

अर्थ—सम्यग्दर्शनादि रत्नत्रय और जीवादि तत्त्वों का [अधिगमः] ज्ञान, [प्रमाणनयैः] प्रमाण और नयों से होता है।

प्रमाणनयैरधिगमः ।।६ ।। - सूत्र का स्पष्टीकरण

सम्यग्दर्शनादि रत्नत्रय और जीवादि तत्त्व [सूत्र १-४]

↓

निक्षेप [सूत्र ५] — का अधिगम अर्थात् ज्ञान अर्थात् जानना [सूत्र ६]

- प्रमाण
- नय

जिनवाणी स्तुति